



https://www.printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

कावासाकी रोग

के संस्करण 2016

3. रोजमर्रा की जदिगी

3.1 इस रोग से बच्चों और परिवार के दैनिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

अगर दिल पर असर न हो तो बच्चा और परिवार एक सामान्य जीवन जीते हैं। हालांकि कावासाकी रोग के लगभग सभी बच्चे पूरी तरह ठीक हो जाते हैं लेकिन बच्चा कुछ दिनों तक थका हुआ और चड़िचड़ा महसूस कर सकता है।

3.2 स्कूल का क्या करना होगा ?

एक बार यह बीमारी पूरी तरह नियंत्रित हो जाती है, जोकि वर्तमान के इलाज से लगभग संभव है और तीव्र चरण जब खत्म हो जाता है, बच्चे को अपने बाकि स्वस्थ साथियों के जैसे हर गतिविधियों में भाग लेने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। बच्चों के लिए स्कूल वैसा ही है जैसा बड़ों के लिए अपना काम। स्कूल एक ऐसा स्थान है जहां पर वह एक स्वतंत्र और उत्पादक व्यक्ति बनना सीखता है। अभिभावकों और शिक्षकों को हर संभव कोशिश करके बच्चे को सामान्य रूप से स्कूल की गतिविधियों में भाग लेने देना चाहिए जिससे वह न केवल एकेडमिक सफलता प्राप्त करे बल्कि अपने साथियों और बड़ों द्वारा स्वीकार किया जाए।

3.3 खेल के बारे में ?

खेल खेलना किसी भी बच्चे की रोजमर्रा की जदिगी का एक अनविार्य पहलू है। चिकित्सा का एक उद्देश्य है बच्चे के लिए जतिना संभव हो सके एक सामान्य जीवन जीए और अपने साथियों से अलग ना समझे। जनि बच्चों को दिल की तकलीफ न हो उन्हें खेलने में और दिनभर की बाकी गतिविधियों में प्रतिबंध की जरुरत नहीं है। हालांकि जनि बच्चों को कोरोनरी धमनियों में एन्यूरिज्म होते हैं, उन्हें विशेष रूप से कशिरावस्था में प्रतिस्पर्धा गतिविधियों में भाग लेने से पहले हृदयरोग विशेषज्ञ से परामर्श लेना चाहिए।

3.4 खानपान कैसा होना चाहिए ?

इसका कोई सबूत नहीं है कि आहार से इस रोग पर कुछ प्रभाव होता है। सामान्य तौर पर बच्चे को उसकी उम्र के लिए संतुलित सामान्य आहार का पालन करना चाहिए। स्वस्थ पर्याप्त प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन के साथ संतुलित आहार एक बढ़ते बच्चे के लिए जरूरी है कोर्टिकोस्टीरॉयड्स से भूख बढ़ जाती है, इसलिए जिन बच्चों को यह दवाई मिल रही है उन्हें कम खाना खिलाना चाहिए।

3.5 क्या बच्चे का टीकाकरण किया जा सकता है ?

आई.वी.आई.जी. के बाद जीना तनु टीकाकरण स्थगित कर दिया जाना चाहिए। बच्चे को क्या टीका दिया जाना है, यह एक चिकित्सक का फैसला होना चाहिए। कुल मिलाकर टीकाकरण से रोग की गतिविधि नहीं बढ़ती और केडी के बच्चों में इसका कोई बुरा असर नहीं होता। नॉन-लाइव कम्पोजिट टीके, केडी के बच्चों में सुरक्षित होते हैं, उन बच्चों में भी जो कि इम्यूनोसुप्रेसिव दवाइयां खा रहे हों। हालांकि ज्यादातर स्टडीज़ टीकाकरण से होने वाले दुर्लभ नुकसानों की जांच करने में असमर्थ है। जो बच्चे उच्च खुराक इम्यूनोसुप्रेसिव दवाइयों पर होते हैं, उन्हें चिकित्सक द्वारा टीकाकरण के बाद रोगजनक वशिष्ट एंटीबाँडी सांद्रता को मापने की सलाह दी जानी चाहिए।